श्री गुजरती समाज बी. एड. महाविद्यालय, इंदौर

प्रतिवेदन

क्षेत्र भ्रमण

बरली डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट फॉर रूरल वीमेन, इंदौर

श्री गुजराती समाज बी. एड. महाविद्यालय के द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में समावेशी शिक्षा, लिंग समानता, साक्षरता प्रशिक्षण, स्वास्थ शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, औपचारिकेत्तर शिक्षा, सामाजिक विकास, नारी सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, सस्टेनेबल विकास के प्रति ज्ञान, जागरूकता, अभिवृत्ति, मूल्य, सहानुभूति आदि गुणों का विकास करने के उद्देश्य से दिनांक 5 अप्रैल 2025 को क्षेत्र भ्रमण हेतु बरली डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट फॉर रूरल वीमेन, इंदौर ले जाया गया। जिसमें 40 शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी व सभी प्राध्यापक शामिल थे ।

बरली डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट फॉर रूरल वीमेन, इंदौर के डॉ. योगेश डी. जाधव मुख्य परिचालन अधिकारी व उनकी पत्नी श्रीमती ताहेरा जाधव, कार्यकारी निदेशक ने बरली संस्थान की जानकारी देते हुए बताया की, ग्रामीण महिलाओं के लिए बरली विकास संस्थान 1985 में अपनी स्थापना के बाद से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए काम कर रहा है। पुरुष-महिला समानता पर बहाई पवित्र लेखन से प्रेरित होकर, संस्थान महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और अपने गांवों के कल्याण में योगदान देने के लिए साक्षरता और उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करता है।

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को बरली संस्थान की जानकारी देते हुए श्रीमती ताहिरा जाधव

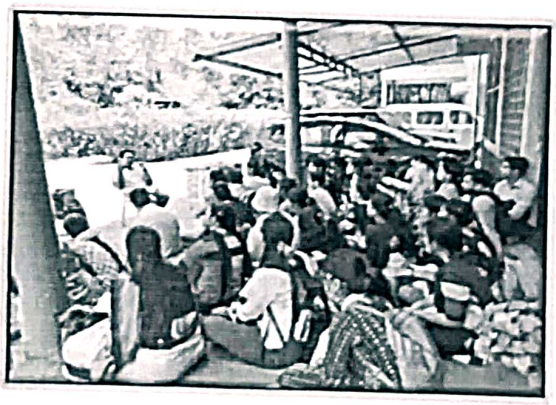

सौर उर्जा द्वारा सब्जियों को सुखाने की प्रक्रिया बताते डॉ. योगेश जाधव

शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बरली शब्द का अर्थ पूछने पर- श्रीमती ताहेरा ने बताया की 'बरली' उन जिलों में भिलाला जनजातियों के बीच एक आम महिला नाम है जहाँ से कई प्रशिक्षु आते हैं। बरली शब्द केंद्रीय स्तंभ को दर्शाता है जो इन क्षेत्रों के विशिष्ट आदिवासी घर को

सहारा देता है, जो संस्थान की इस मान्यता को उजागर करता है कि महिलाएँ समाज का केंद्रीय स्तंभ हैं। इसी के साथ उन्होंने बताया की इंदौर में स्थित, संस्थान ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिन्हें स्कूली शिक्षा का अवसर नहीं मिला और जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया।

अधिकांश प्रशिक्षु पश्चिमी मध्य प्रदेश से आते हैं, कई भारत के अन्य राज्यों और क्षेत्रों से भी आते हैं। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचितों, यानी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग, शारीरिक रूप से विकलांग, अनाथ, विधवा, तलाकशुदा, प्रताड़ित और उपेक्षित लोगों को प्राथमिकता दी जाती है।

श्रीमती ताहेरा ने बताया की, संस्था द्वारा अपनाया गया पाठ्यक्रम बहाई दर्शन पर आधारित हैं साथ ही आवासीय और निशुल्क है। सारे पाठ्यक्रम समग्र रूप से एक एकीकृत तरीके से सहभागिता और सहयोगियों के माध्यम से सिखाए जाते हैं। तथा पाठ्यक्रम के आधार पर ही तैयार की गई पुस्तकों से प्रशिक्षुओं को पढाया जाता है ।

संस्थान में दो प्रमुख प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं एक सामुदायिक स्वयं सेवकों के लिए जो अनपढ़ या अर्ध साक्षर होती है और दूसरा ग्रासरूट प्रशिक्षकों के लिए जो हाई स्कूल पास कर चुकी है अथवा स्कूल ड्रॉप आउट है। सामुदायिक स्वयंसेवक 6 महीने का प्रशिक्षण पूरा करते हैं जिसमें वह सामुदायिक विकास, स्वास्थ्य, सिलाई ,साक्षरता, जैविक खेती और सौर ऊर्जा के विषय में सीखते हैं। 6 महीना के प्रशिक्षण के बाद वह सिलाई की परीक्षा भी देते हैं ग्रासरूट प्रशिक्षक प्रथम 6 महीना में सामुदायिक स्वयंसेवकों के पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए प्रशिक्षकों की सहायता करते हैं। अगले 6 महीनों में वह इसे अपने समुदाय में क्रियान्वित करने का प्रशिक्षण एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं । बरली संस्थान में प्रशिक्षणार्थी पढ़ना, लिखना, सरल किताबें, संदेश, फॉर्म आदि समझना और वजन, माप, समय एवं सरल गणित करना सिखाते हैं। प्रायोगिक रूप से प्रशिक्षणार्थी रिकॉर्ड रखना, रिसिप्ट बनाना कीमत आंकना, सरकारी अफसर तक दरखास्त ले जाना आदि सीखते हैं।

ग्रामीण समुदाय में विकास को बढ़ावा देने के लिए संस्थान समय-समय पर माता-पिता, परिवार, सामाजिक कार्यकर्ताओं, गैर सरकारी संगठनों और स्वयं सहायता समूह के लिए प्रशिक्षण आयोजित करता है।

श्रीमती ताहेरा ने बताया की, व्यक्तित्व विकास और साक्षरता, बरली संस्थान के सभी पाठ्यक्रमों का केंद्र बिंदु है। संस्थान द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को अपने व्यक्तित्व विकास के द्वारा परिवार और समुदाय में सकारात्मक परिवर्तन लाने व आत्मविश्वास और आत्म सम्मान की भावना सुदृढ़ करने का प्रयास किया जाता हैं। साथ ही स्वस्थ और स्वच्छता पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां पर सामान्य बिमारियों उनसे बचाव एवं इलाज के बारे में सिखाया जाता है साथ ही पोषक आहार साफ पानी स्वस्थ जीवन शैली गर्भावस्था टीकाकरण एवं बच्चों के लालन पोषण के बारे में भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण के अंतर्गत सामुदायिक स्वयंसेवक सिलाई- कटाई के साथ-साथ कशीदाकारी, झूले बनाना, झूमर बनाना, मोती से गहने तैयार करना, सौर ऊर्जा से सब्जियां सुखाना, हर्बल शैंपू आदि बनाना सीखती हैं।

सहारा देता है, जो संस्थान की इस मान्यता को उजागर करता है कि महिलाएँ समाज का केंद्रीय स्तंभ हैं। इसी के साथ उन्होंने बताया की इंदौर में स्थित, संस्थान ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिन्हें स्कूली शिक्षा का अवसर नहीं मिला और जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया।

अधिकांश प्रशिक्षु पश्चिमी मध्य प्रदेश से आते हैं, कई भारत के अन्य राज्यों और क्षेत्रों से भी आते हैं। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचितों, यानी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग, शारीरिक रूप से विकलांग, अनाथ, विधवा, तलाकशुदा, प्रताड़ित और उपेक्षित लोगों को प्राथमिकता दी जाती है।

श्रीमती ताहेरा ने बताया की, संस्था द्वारा अपनाया गया पाठ्यक्रम बहाई दर्शन पर आधारित हैं साथ ही आवासीय और निशुल्क है। सारे पाठ्यक्रम समग्र रूप से एक एकीकृत तरीके से सहभागिता और सहयोगियों के माध्यम से सिखाए जाते हैं। तथा पाठ्यक्रम के आधार पर ही तैयार की गई पुस्तकों से प्रशिक्षुओं को पढाया जाता है ।

संस्थान में दो प्रमुख प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं एक सामुदायिक स्वयं सेवकों के लिए जो अनपढ़ या अर्ध साक्षर होती है और दूसरा ग्रासरूट प्रशिक्षकों के लिए जो हाई स्कूल पास कर चुकी है अथवा स्कूल ड्रॉप आउट है। सामुदायिक स्वयंसेवक 6 महीने का प्रशिक्षण पूरा करते हैं जिसमें वह सामुदायिक विकास, स्वास्थ्य, सिलाई ,साक्षरता, जैविक खेती और सौर ऊर्जा के विषय में सीखते हैं। 6 महीना के प्रशिक्षण के बाद वह सिलाई की परीक्षा भी देते हैं ग्रासरूट प्रशिक्षक प्रथम 6 महीना में सामुदायिक स्वयंसेवकों के पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए प्रशिक्षकों की सहायता करते हैं। अगले 6 महीनों में वह इसे अपने समुदाय में क्रियान्वित करने का प्रशिक्षण एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं । बरली संस्थान में प्रशिक्षणार्थी पढ़ना, लिखना, सरल किताबें, संदेश, फॉर्म आदि समझना और वजन, माप, समय एवं सरल गणित करना सिखाते हैं। प्रायोगिक रूप से प्रशिक्षणार्थी रिकॉर्ड रखना, रिसिप्ट बनाना कीमत आंकना, सरकारी अफसर तक दरखास्त ले जाना आदि सीखते हैं।

ग्रामीण समुदाय में विकास को बढ़ावा देने के लिए संस्थान समय-समय पर माता-पिता, परिवार, सामाजिक कार्यकर्ताओं, गैर सरकारी संगठनों और स्वयं सहायता समूह के लिए प्रशिक्षण आयोजित करता है।

श्रीमती ताहेरा ने बताया की, व्यक्तित्व विकास और साक्षरता, बरली संस्थान के सभी पाठ्यक्रमों का केंद्र बिंदु है। संस्थान द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को अपने व्यक्तित्व विकास के द्वारा परिवार और समुदाय में सकारात्मक परिवर्तन लाने व आत्मविश्वास और आत्म सम्मान की भावना सुदृढ़ करने का प्रयास किया जाता हैं। साथ ही स्वस्थ और स्वच्छता पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां पर सामान्य बिमारियों उनसे बचाव एवं इलाज के बारे में सिखाया जाता है साथ ही पोषक आहार साफ पानी स्वस्थ जीवन शैली गर्भावस्था टीकाकरण एवं बच्चों के लालन पोषण के बारे में भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण के अंतर्गत सामुदायिक स्वयंसेवक सिलाई- कटाई के साथ-साथ कशीदाकारी, झूले बनाना, झूमर बनाना, मोती से गहने तैयार करना, सौर ऊर्जा से सब्जियां सुखाना, हर्बल शैंपू आदि बनाना सीखती हैं।

डॉ. योगेश ने बताया की इस संस्थान में पर्यावरण संरक्षण को एक आध्यात्मिक दायित्व के रूप में सिखाया जाता है यहां हर सुबह प्रशिक्षणार्थी जैविक खेती करते हैं और सब्जी, फल, औषधीय पौधे उगाना सीखते हैं व सिंचाई के तरीके, कंपोस्ट तैयार करना और नर्सरी के विकास की जानकारी प्राप्त करते हैं साथी वह सब्जियों को सोलर ड्रायर के माध्यम से सुखना भी सिखाते हैं। जिससे पर्यावरण संरक्षण एवं रख रखाव में सहायता प्राप्त हो सके। साथ ही शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को सोलर ड्राय में सुखाए गए ऑर्गेनिक शहतूत भी खाने को दिए गए जो की बहुत स्वादिष्ट थे।

इसी के साथ संस्थान साल में 300 दिन 100 प्रशिक्षणार्थियों के लिए खाना पकाने के लिए सोलर कुकर (शेफ्लर कुकर) का इस्तेमाल करता है, दिन में 3 बार भोजन तैयार की किया जाता है इससे हर महीने करीब 12 एलपीजी सिलेंडर की बचत होती है।

डॉ. योगेश, शिक्षक- प्रशिक्षणार्थियों को सोलर कुकर के उपयोग का प्रशिक्षण देते हुए

डॉ. योगेश, शिक्षक- प्रशिक्षणार्थियों को सस्टेनेबल खेती की जानकारी देते हुए

प्रशिक्षण के आकलन के सम्बन्ध में पूछने पर डॉ. योगेश ने बताया की संस्थान में आए सभी प्रशिक्षणार्थियों की क्षमताओं में वृद्धि का आकलन प्रवेश के समय तथा प्रशिक्षण के बाद प्रायोगिक मूल्यांकन किया जाता है।

संस्थान को सन 1992 में यू.एन.इ.पी. द्वारा ग्लोबल 500 रोल ऑफ़ ऑनर प्रदान किया गया यह सम्मान संस्था को नारू रोग को समाप्त करने के लिए अपने योगदान के लिए दिया गया। सन 1994 में संस्थान यूनेस्को के इन्नोवा डेटाबेस में, विकासशील देशों में शिक्षा के लिए विश्व भर में सफल 81 प्रोजेक्ट में सम्मिलित किया गया। साथ ही गाइड स्टार इंडिया द्वारा सन 2016 में संगठनात्मक पारदर्शिता के लिए गोल्ड अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।

इस दौरान सभी शिक्षक- प्रशिक्षणार्थियों ने प्रश्नों के द्वारा अपनी जिज्ञासा को डॉ. योगेश के समक्ष रखा। डॉ. योगेश ने बड़े ही सरल व प्रभावी ढंग से सभी की जिज्ञासा के उत्तर प्रदान किये। इस क्षेत्र भ्रमण के द्वारा शिक्षक- प्रशिक्षणार्थियों ने समावेशी शिक्षा, लिंग समानता, साक्षरता प्रशिक्षण, स्वास्थ शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, औपचारिकेत्तर शिक्षा, सामाजिक

विकास, नारी सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, सस्टेनेबल विकास का व्यवहृत ज्ञान प्राप्त किया। अंत में सभी शिक्षक- प्रशिक्षणार्थियों व प्राध्यापकों द्वारा संस्था को 2100/-रुपये की सहायता राशी भेंट की गयी।

बरली डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट फॉर रूरल वीमेन, में डॉ. योगेश जाधव व श्रीमती ताहेरा जाधव के साथ शिक्षक- प्रशिक्षणार्थियों व प्राध्यापक

क्षेत्र भ्रमण प्रभारी
कीर्ति यादव
सहा. प्राध्यापक

प्राचार्य
डॉ. किरण दम्मानी